Content

:: अनुक्रमणिका ::

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश पृ. 01 से 45

प्रास्ताविक — उपन्यास : एक आधुनिक साहित्य प्रकार — यूरोप में उपन्यास का उद्भव — उपन्यास के उद्भव और विकास के कारक — हिन्दी गद्य का विकास — हिन्दी उपन्यास का विकास — पूर्वप्रेमचंद-काल — प्रेमचन्दकाल — प्रेमचन्दोत्तरकाल — उपन्यास में भाषा का महत्व — राल्फ फोक्स का मत — ईरा वाल्फर्ट का मत — औपन्यासिक यथार्थ और भाषा — एक ही उपन्यास में भाषा के कई स्तर — एक ही उपन्यासकार में भाषा के विभिन्न स्तर — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

द्वितीय अध्याय : शैलेश मटियानीजी के उपन्यासों की कथावस्तु : भाषिक-संरचना के विशेष संदर्भ में पृ. 46 से 95

प्रास्ताविक — शैलेश मटियानी — मटियानीजी की कुछ साहित्यिक अवधारणाएं — मटियानीजी के उपन्यासों की कथावस्तु : भाषिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में — हौलदार — चिट्ठीरसैन — मुख सरोवर के हंस — किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई — कबूतरखाना — बोरीवली से बोरीबन्दर तक — छोटे-छोटे पक्षी — आकाश कितना अनंत है — रामकली — गोपुली गफूरन — बर्फ गिर चुकने के बाद — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

तृतीय अध्याय : पात्र-निरूपण में भाषा का योग पृ. 96 से 124

प्रास्ताविक — पात्र-निरूपण में भाषा का योग — आलोच्य उप-न्यास — हौलदार — चिट्ठीरसैन — चौथी मुट्ठी — बोरीवली से बोरीबन्दर तक — किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई — नागवल्लरी — जलतरंग — आकाश कितना अनंत है — चन्द औरतों का शहर —

बावन नदियों का संगम — बर्फ गिर चुकने के बाद आदि उपन्यासों के प्रमुख पात्रों के संदर्भ में — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : कुमाऊं की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यासों की भाषा पृ. 125 से 169

प्रास्ताविक — कुछ भाषागत प्रयोग — संबंधवाची शब्द — रोजमर्रा के शब्द — गुजराती से मिलते-जुलते शब्द — लौकिक बोली तथा कृषि-विषयक शब्द — व्यक्तिवाची शब्द — संबंधवाची और संबोधनवाची शब्द — जाति-विशेष को सूचित करने वाले शब्द — कुमाऊं के लोकदेवता और उनसे सम्बद्ध शब्दश: शब्दावली — लोकमान्यताओं तथा अंधविश्वास और उनसे सम्बद्ध शब्दावली — कुमाऊं प्रदेश के कतिपय तीज-त्यौहार-संस्कार और उनसे सम्बद्ध शब्दावली — गालीवाची शब्द — लोकोक्तियों और कहावतों का प्रयोग — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : नगरीय पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यासों की भाषा पृ. 170 से 225

प्रास्ताविक — बम्बइया परिवेश से युक्त उपन्यासों की भाषा — आलोच्य उपन्यास — बोरीवली से बोरीबन्दर तक — किस्सा नर्मदा-बेन गंगूबाई — कबूतरखाना — निष्कर्ष — अन्य नगरीय परिवेश वाले उपन्यास — छोटे छोटे पक्षी — आकाश कितना अनंत है — जलतरंग — रामकली — चन्द औरतों का शहर — गोपुली गफूरन — माया सरोवर — बर्फ गिर चुकने के बाद — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम — ।

षष्ठ अध्याय : मटियानीजी के उपन्यासों में नवीन भाषा-शिल्प एवं भाषा-शैली पृ. 226 से 298

प्रास्ताविक — (अ) मटियानीजी के उपन्यासों में उपलब्ध नवीन भाषा-शिल्प : नये शब्द-रूप — नये क्रियारूप — नये उपमान — नये विशेषण : विशेषण-विपर्यय (ट्रान्सफर्ड एपिथेट) — विशेषण पदबंध — नये रूपक —

नवीन भाषाभिव्यंजना के अन्य रूप — नवीन कहावतों और मुहावरों का प्रयोग — व्यक्तिवाची ~~कहावतें~~ × कहावतें — §ब§ विभिन्न भाषा-शैलियां — शैली की परिभाषा — भाषा-शैलियों की कोटियां : §1§ सैद्धान्तिक दृष्टि से , §2§ उपन्यास के रूपबंध की दृष्टि से , §3§ परिवेश के आधार पर और §4§ अन्य आधारों की दृष्टि से । सैद्धान्तिक दृष्टि से : मधुर शैली , सरस शैली , विदग्ध शैली , व्यास शैली , समास शैली , प्रौढ़ि शैली , धारा शैली , तरंग शैली : §2§ उपन्यास के रूपबंध के आधार पर : पनोरमिक शैली , सरितोपम शैली , दृढ़ और शिथिल गठन की शैली , विषयाधिक्य और विषयाल्पत्व वाली शैली , आत्मसंभाषणात्मक शैली , लोककथात्मक शैली §3§ परिवेश के आधार पर : कुमाऊं की लोकबोली वाली शैली , नगरीय परिवेश की आम-फहम शैली , बम्बइया परिवेश की शैली , उस्तादों और गंजेड़ियों की शैली §4§ अन्य आधार पर : लोकगीत वाली शैली , कविता के उद्धरण वाली शैली , चेतनाप्रवाह शैली , एब्सर्ड शैली — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

सप्तम अध्याय : उपसंहार : पृ. 299 से 314

विषय की उपादेयता और उपलब्धियां — प्रबंध का सार-संक्षेप — भविष्यत् संभावनाएं ।

संदर्भिका § बिब्लिओग्राफी § : 315 - 322

§1§ परिशिष्ट - स : उपजीव्य-ग्रन्थों की सूची
§2§ परिशिष्ट - र : सहायक-ग्रन्थ-सूची §अंग्रेजी§
§3§ परिशिष्ट - ग : सहायक-ग्रन्थ-सूची § हिन्दी §
§4§ परिशिष्ट - म : पत्र-पत्रिकाएं ।

xxxxxxxxxxxx